दबाव समूह और राजनीतिक दल

राजनीतिक व्यवस्था में दबाव समूहों का सबसे अधिक घनिष्ठ संबंध राजनीतिक दलों से होता है। दबाव समूहों व राजनीतिक दलों में पारस्परिक निर्भरता रहती है क्योंकि दोनों को अपने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए एक दूसरे के सहयोग की आवश्यकता होती है। दोनों ही अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए निर्णय निर्माण प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। लेकिन दोनों संगठनों में काफी अंतर भी होता है। किसी भी राजनीतिक दल का एक निश्चित दल और विचारधारा विशेष की ओर झुकाव होता है। दल पूर्ण रूप से सत्ता संघर्ष में सक्रिय रहता है और एक व्यवसाय की भांति राजनीति में भाग लेता है। जबकि, दवाब समूहों की स्थिति इसके विपरित होती है। ये किसी खास उद्देश्य के साथ ही राजनीतिक संबंध स्थापित करते हैं और राजनीतिक प्रक्रियाओं में सक्रिय होते हैं। इनका निर्माण किसी हित की पूर्ति के लिए ही किया जाता है जिससे वह हित से संबंधित सीमाओं तक ही निर्णय निर्माण प्रक्रिया को प्रभावित कर सकें। **जूनियर. के** अपनी **पुस्तक पॉलिटिक्स, पार्टिज एण्ड प्रेशर ग्रुप्स** में कहते हैं कि "राजनीतिक दल और दबावकारी गुट औपचारिक और संविधानेत्तर अभिकरण हैं जो औपचारिक संविधानिक पद्धति के लिए काफी मात्रा में उत्प्रेरण की व्यवस्था करते हैं।" दबाव समूह और राजनीतिक दल दोनों ही कुछ विशेष परिस्थितियों में परस्पर स्वतंत्र होकर तथा कभी कभी पारस्परिक विरोध में भी कार्य करते हैं। कुछ परिस्थितियों में तो अनेक दबाव समूह किसी एक दल के बजाय एक हि साथ दो या दो से अधिक दलों से अपना कार्य करवाते हुए भी देखे गए हैं। अतः दबाव समूह और राजनीतिक दलों में कुछ समानताओं के साथ बहुत सारी असमानताएं भी हैं। इन दोनों में कुछ प्रमुख अंतर इस प्रकार हैं–

1. **उद्देश्य संबंधी** :– दबाव समूह किसी एक अथवा कुछ हितों की पूर्ति का उद्देश्य रखते हैं। इनके उद्देश्य विशिष्ट, स्पष्ट सीमित और निजी होते हैं। जबकि राजनीतिक दलों के उद्देश्य सामान्य और सम्पूर्ण समाज की हित से संबंधित होते हैं।

2. **कार्यक्षेत्र संबंधी** :– दबाव समूहों का कार्यक्षेत्र विशिष्ट और संकिर्ण होता है जबकि दलों का कार्यक्षेत्र विस्तृत होता है। इन्हें सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक आदी सभी क्षेत्रों में काम करना होता है। दबाव समूहों का संबंध मानव जीवन के किसी एक पहलु से संबंधित रहता है जबकि राजनीतिक दल मानव जीवन की संपूर्ण गतिविधियों से संबंधित होते हैं।

3. **सदस्यता संबंधी** :– कोई व्यक्ति एक समय में केवल एक ही राजनीतिक दल का सदस्य हो सकता है। जबकि अपने हितों की पूर्ति के लिए एक ही व्यक्ति एक समय पर कई दबाव समूहों का सदस्य हो सकता है।

4. **राजनीतिक सहभागीता संबंधी** :– दबाव समूह राजनीतिक प्रक्रियाओं में प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लेते। ये राजनीतिक प्रक्रियाओं से बाहर रहकर उसे प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। इनका स्वरूप गैर राजनीतिक होता है। जबकि राजनीतिक दल राजनीतिक प्रक्रियायों में सक्रिय भागीदारी करते हैं। इनका उद्देश्य सत्ता प्राप्त करना होता है और ये निर्णयों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। इनका स्वरूप राजनीतिक होता है।

5. **निर्वाचन संबंधी** :– दबाव समूह किसी क्षेत्र विशेष में प्रतिनिधित्व के लिए राजनीतिक दलों की भांति अपना उम्मीदवार खड़ा नहीं करते। इनका प्रतिनिधित्व समूह के अंदर से हि कोई व्यक्ति करता है और उसके निर्वाचन में समूह के सदस्य ही भाग लेते हैं। जबकि राजनीतिक दलों का चुनाव क्षेत्र व्यापक होता है। इसमें आमजनमास को भी भागीदारी करने का अवसर मिलता है।

6. **संगठन संबंधी** :– राजनीतिक दलों और दबाव समूहों दोनों संगठन के स्तर पर राष्ट्रव्यापी और क्षेत्रीय दोनो हो सकते हैं। लेकिन दबाव समूह अपने संगठन और कार्यक्रम में राजनीतिक दलों की अपेक्षा अधिक सुव्यवस्थित होते हैं।

दबाव समूहों और राजनीतिक दलों में उपरोक्त असमानताओं के साथ कुछ पारस्पारिकता भी देखने को मिलती है। जैसे प्रायः ऐसा देखा जाता है कि जब दबाव समूह अत्यधिक संगठित और प्रभावशाली रूप में समाज में व्याप्त होते हैं तो राजनीतिक दल उनके प्रभाव और संगठन की तुलना में कमजोर पड़ जाते हैं और जहां राजनीतिक दल विशेष रूप से सबल एवं संगठित होते हैं वहां दबाव समूह पिछड़ जाते है। लेकिन यह बात स्पष्ट है कि सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं में चाहे वह लोकतांत्रिक हो, साम्यवादी हो या राजतांत्रिक हो वहां दबाव समूह मौजूद होते हैं।